एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 03 (मई-जून, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

रसायन छोड़कर जीवामृत आधारित जैविक खेती से 100 एकड़ में सफल समेकित कृषि मॉडल की स्थापना: सफलता की एक कहानी

डॉ. द्वारका[1], डॉ. आनन्द मिलन[2], शोभाराम ठाकुर[3], श्रध्दा परमार[4],
मनोज कुमार अहिरवार[5] एवं *निशा चढ़ार[6]

[1]अतिथि शिक्षक, कीटशास्त्र विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश, भारत

[2]अतिथि शिक्षक, पौधरोग विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश, भारत

[3]वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एक्रिप परियोजना तिल फसल, कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश, भारत

[4]पीएच.डी. शोधार्थी, कीटशास्त्र विभाग, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

[5]कृषि विज्ञान केन्द्र प्रमुख, दमोह, मध्य प्रदेश, भारत

[6]एम.एससी. (बॉटनी), महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, शासकीय स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: chadarnisha63@gmail.com

खरगोन जिले के किसान देवेन्द्र सिंह सिसोदिया ने रासायनिक खेती को छोड़कर जीवामृत आधारित जैविक खेती को अपनाया और लगभग 100 एकड़ क्षेत्र में समेकित कृषि मॉडल विकसित किया। उन्होंने डेयरी, फिश फार्मिंग एवं फसल उत्पादन को एक साथ जोड़कर खेती की लागत कम की और आय के नए स्रोत विकसित किए। उनके द्वारा उत्पादों को "श्रीदेवगिरी" नाम से बाजार में बेचा जा रहा है। उनकी सफलता से क्षेत्र के अन्य किसान भी जैविक खेती की ओर प्रेरित हो रहे हैं।

किसान का विवरण: नाम– देवेन्द्र सिंह सिसोदिया, ग्राम– हिंगानासीर, बुदनी, जिला– खरगोन, मध्यप्रदेश, परिवार का सहयोग– स्वाति सिंह सिसोदिया, कुल कृषि क्षेत्र– लगभग 100 एकड़।

परिचय

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहां देश की बड़ी आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। लंबे समय से भारतीय कृषि व्यवस्था में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग किया जाता रहा है, जिससे प्रारंभिक वर्षों में उत्पादन में वृद्धि तो हुई, लेकिन धीरे–धीरे इसके दुष्परिणाम भी सामने आने लगे। लगातार रासायनिक खेती करने से मिट्टी की उर्वरता में कमी आने लगी, भूमि की जैविक गुणवत्ता प्रभावित हुई, जल स्रोत प्रदूषित होने लगे तथा किसानों की उत्पादन लागत में लगातार वृद्धि होती गई। इसके अतिरिक्त रासायनिक अवशेषों वाले खाद्य पदार्थ मानव स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर खतरा बनते जा रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में किसानों और कृषि वैज्ञानिकों के बीच टिकाऊ, कम लागत वाली एवं पर्यावरण–अनुकूल खेती पद्धतियों की आवश्यकता को गंभीरता से महसूस किया जाने लगा। इसी आवश्यकता ने जैविक खेती और प्राकृतिक कृषि की अवधारणा को नई दिशा प्रदान की।

जैविक खेती केवल रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का विकल्प नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी समग्र कृषि प्रणाली है जो मिट्टी, जल, पर्यावरण, पशुधन और मानव स्वास्थ्य के बीच संतुलन स्थापित करती है। इस प्रणाली में प्राकृतिक संसाधनों और स्थानीय जैविक पदार्थों का उपयोग करके कृषि उत्पादन किया जाता है। जीवामृत आधारित खेती

इसी जैविक एवं प्राकृतिक कृषि का एक महत्वपूर्ण अंग है। जीवामृत एक प्राकृतिक जैविक घोल है, जिसे गोबर, गौमूत्र, गुड़, बेसन अथवा दाल का आटा तथा मिट्टी आदि स्थानीय संसाधनों से तैयार किया जाता है। यह मिट्टी में सूक्ष्मजीवों की संख्या बढ़ाकर भूमि की उर्वरता और फसल की उत्पादकता में सुधार करता है। जीवामृत आधारित खेती कम लागत में अधिक टिकाऊ उत्पादन देने वाली प्रणाली मानी जाती है, क्योंकि इसमें रासायनिक इनपुट पर निर्भरता कम हो जाती है और खेती प्राकृतिक चक्रों के अनुरूप संचालित होती है।

वर्तमान समय में जब जलवायु परिवर्तन, मिट्टी की गिरती गुणवत्ता और बढ़ती उत्पादन लागत जैसी समस्याएं कृषि क्षेत्र के सामने गंभीर चुनौती बन चुकी हैं, तब जीवामृत आधारित जैविक खेती किसानों के लिए आशा की नई किरण के रूप में उभर रही है। अनेक प्रगतिशील किसानों ने रासायनिक खेती को छोड़कर प्राकृतिक एवं जैविक खेती की ओर कदम बढ़ाए हैं और उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। इसी क्रम में 100 एकड़ क्षेत्र में स्थापित सफल समेकित कृषि मॉडल एक प्रेरणादायक उदाहरण के रूप में सामने आया है। यह मॉडल यह सिद्ध करता है कि यदि वैज्ञानिक सोच, स्थानीय संसाधनों का समुचित उपयोग तथा प्राकृतिक कृषि सिद्धांतों को अपनाया जाए, तो बड़े स्तर पर भी जैविक खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है।

समेकित कृषि प्रणाली की विशेषता यह है कि इसमें केवल फसल उत्पादन तक सीमित न रहकर विभिन्न कृषि एवं सहायक गतिविधियों को एक–दूसरे से जोड़ा जाता है। इस मॉडल में फसल उत्पादन, पशुपालन, डेयरी, मत्स्य पालन, वर्मी कम्पोस्ट, जैविक खाद निर्माण, वृक्षारोपण और जल संरक्षण जैसी गतिविधियों को एक साथ समन्वित रूप से संचालित किया जाता है। इससे संसाधनों का पुनः उपयोग संभव होता है तथा खेती अधिक लाभकारी और टिकाऊ बनती है। उदाहरण के लिए पशुओं से प्राप्त गोबर एवं गौमूत्र का उपयोग जीवामृत और जैविक खाद बनाने में किया जाता है, जबकि खेतों से प्राप्त कृषि अवशेष पशुओं के चारे के रूप में प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार कृषि और पशुपालन के बीच एक प्राकृतिक चक्र विकसित हो जाता है, जिससे लागत कम होती है और आय के अनेक स्रोत विकसित होते हैं।

100 एकड़ क्षेत्र में स्थापित यह समेकित कृषि मॉडल केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के प्रयोग को छोड़कर जीवामृत आधारित खेती अपनाने से मिट्टी की संरचना में सुधार हुआ, भूमि में जैविक कार्बन की मात्रा बढ़ी तथा लाभकारी सूक्ष्मजीवों की सक्रियता में वृद्धि हुई। इससे फसलें अधिक स्वस्थ और रोग प्रतिरोधी बनीं। मिट्टी की जलधारण क्षमता बढ़ने से सिंचाई की आवश्यकता भी कम हुई और जल संरक्षण में सहायता मिली। इसके साथ ही जैविक खेती से प्राप्त उत्पाद रासायनिक अवशेषों से मुक्त होने के कारण बाजार में अधिक मांग और बेहतर मूल्य प्राप्त करने लगे।

इस मॉडल की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह भी है कि इसने स्थानीय किसानों को जैविक एवं प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया। आसपास के किसान इस सफल उदाहरण को देखकर जीवामृत, घनजीवामृत, वर्मी कम्पोस्ट तथा प्राकृतिक कीटनाशकों का उपयोग करने लगे हैं। इससे पूरे क्षेत्र में टिकाऊ कृषि की दिशा में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को भी जैविक खाद निर्माण, डेयरी, खाद्य प्रसंस्करण तथा कृषि आधारित गतिविधियों में रोजगार के अवसर प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार यह मॉडल केवल खेती तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्रामीण विकास, रोजगार सृजन और सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण का भी महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है।

आज जब पूरी दुनिया टिकाऊ विकास, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और सुरक्षित खाद्य उत्पादन की दिशा में आगे बढ़ रही है, तब जीवामृत आधारित जैविक खेती का यह समेकित मॉडल भविष्य की कृषि के लिए एक आदर्श मार्ग प्रस्तुत करता है। यह मॉडल यह स्पष्ट संदेश देता है कि खेती को केवल उत्पादन का माध्यम न मानकर प्रकृति, पर्यावरण और समाज के साथ संतुलन स्थापित करने वाली जीवन प्रणाली के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। रसायन छोड़कर जीवामृत आधारित जैविक खेती अपनाना न केवल किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने का मार्ग है, बल्कि यह स्वस्थ समाज, सुरक्षित पर्यावरण और आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था के निर्माण की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है।

समस्या

क्षेत्र में लंबे समय से रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों पर आधारित खेती की जा रही थी, जिससे मिट्टी की उर्वरता कम हो रही थी और खेती की लागत लगातार बढ़ रही थी। इसके अलावा उत्पादों की गुणवत्ता में कमी और पर्यावरण पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था। बाजार में जैविक उत्पादों की बढ़ती मांग को देखते हुए किसानों के सामने टिकाऊ एवं लाभकारी खेती की आवश्यकता महसूस की जा रही थी।

हस्तक्षेप

किसान देवेन्द्र सिंह सिसोदिया ने वैज्ञानिक सलाह एवं स्वयं के अनुभव के आधार पर रासायनिक खेती को छोड़कर जैविक एवं समेकित कृषि प्रणाली अपनाई। इसके अंतर्गत उन्होंने निम्न तकनीकों का प्रयोग किया–

- खेतों में जीवामृत, गोबर खाद एवं गोमूत्र आधारित जैविक घोल का प्रयोग।
- फसल चक्र एवं मिश्रित खेती प्रणाली अपनाना।
- डेयरी फार्म की स्थापना (लगभग 45 देशी नस्ल की गायें)।
- फिश फार्मिंग को कृषि प्रणाली के साथ जोड़ना।
- नीम, लहसुन आदि से बने जैविक कीटनाशकों का उपयोग।
- जैविक उत्पादों को "श्रीदेवगिरी" ब्रांड नाम से बाजार में बेचना।

परिणाम

लगभग 100 एकड़ क्षेत्र में सफलतापूर्वक जैविक खेती का संचालन यह दर्शाता है कि समर्पण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और उचित प्रबंधन के माध्यम से बड़े स्तर पर भी जैविक कृषि को प्रभावी रूप से अपनाया जा सकता है। सामान्यतः यह

धारणा बनी रहती है कि जैविक खेती केवल छोटे स्तर पर ही संभव है और बड़े क्षेत्र में इसका प्रबंधन कठिन होता है, परंतु इस सफल मॉडल ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग, उचित फसल प्रबंधन तथा आधुनिक कृषि तकनीकों का समन्वय किया जाए, तो बड़े भू–भाग पर भी जैविक खेती लाभकारी और टिकाऊ सिद्ध हो सकती है। लगभग 100 एकड़ क्षेत्र में जैविक खेती का सफल संचालन किसानों के लिए प्रेरणास्रोत बन गया है। इस विशाल क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की फसलें, फल, सब्जियाँ तथा अन्य कृषि गतिविधियाँ प्राकृतिक एवं जैविक विधियों से संचालित की जा रही हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि जैविक खेती केवल पर्यावरण संरक्षण का माध्यम ही नहीं, बल्कि बड़े पैमाने पर आर्थिक लाभ अर्जित करने की भी एक प्रभावी प्रणाली है। इस प्रकार की खेती से भूमि की उत्पादकता लंबे समय तक बनी रहती है तथा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भी संभव हो पाता है।

रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों की लागत में कमी इस जैविक कृषि प्रणाली की एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि है। वर्तमान समय में रासायनिक खादों और कीटनाशकों की कीमतें लगातार बढ़ती जा रही हैं, जिससे किसानों की उत्पादन लागत में अत्यधिक वृद्धि हो रही है। कई बार किसानों को अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए भारी मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करना पड़ता है, जिसके कारण आर्थिक बोझ बढ़ जाता है। इसके विपरीत जैविक खेती में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध गोबर, पशु अपशिष्ट, कृषि अवशेष, वर्मी कम्पोस्ट तथा जैविक घोलों का उपयोग किया जाता है, जिससे बाहरी रासायनिक इनपुट पर निर्भरता कम हो जाती है। प्राकृतिक कीटनाशकों एवं जैविक उपायों के प्रयोग से फसलों की सुरक्षा भी कम लागत में संभव हो पाती है। परिणामस्वरूप किसानों की कुल उत्पादन लागत में उल्लेखनीय कमी आती है और उनकी शुद्ध आय में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त रासायनिक पदार्थों के कम उपयोग से मिट्टी एवं पर्यावरण को होने वाले दुष्प्रभाव भी कम हो जाते हैं, जिससे कृषि अधिक सुरक्षित और दीर्घकालीन रूप से लाभकारी बनती है।

जैविक खेती अपनाने से मिट्टी की उर्वरता एवं उत्पादों की गुणवत्ता में भी उल्लेखनीय सुधार देखा गया है। रासायनिक खेती में लगातार रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से मिट्टी की प्राकृतिक संरचना प्रभावित होती है और उसमें उपस्थित लाभकारी सूक्ष्मजीवों की संख्या घटने लगती है। इससे भूमि की उत्पादकता धीरे–धीरे कम हो जाती है। इसके विपरीत जैविक खेती में प्राकृतिक खादों, हरी खाद, गोबर खाद तथा वर्मी कम्पोस्ट के उपयोग से मिट्टी में जैविक कार्बन की मात्रा बढ़ती है और उसकी संरचना में सुधार होता है। मिट्टी अधिक भुरभुरी एवं उपजाऊ बनती है तथा उसकी जलधारण क्षमता भी बढ़ जाती है। इससे फसलें अधिक स्वस्थ और रोग प्रतिरोधी बनती हैं। जैविक पद्धति से उत्पादित अनाज, फल एवं सब्जियाँ रासायनिक अवशेषों से मुक्त होती हैं, जिससे उनकी गुणवत्ता और पोषण मूल्य अधिक होता है। ऐसे उत्पाद स्वादिष्ट, सुरक्षित तथा स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माने जाते हैं। वर्तमान समय में उपभोक्ताओं के बीच जैविक उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है, क्योंकि लोग स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं। इस प्रकार जैविक खेती न केवल भूमि की गुणवत्ता को सुधारती है, बल्कि उपभोक्ताओं को भी सुरक्षित एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराती है।

डेयरी, फसल उत्पादन एवं मत्स्य पालन जैसे विभिन्न कृषि आधारित कार्यों को एक साथ जोड़ने से अतिरिक्त आय के अनेक स्रोत विकसित हुए हैं। समेकित कृषि प्रणाली की यही सबसे बड़ी विशेषता है कि इसमें किसान केवल एक ही गतिविधि पर निर्भर नहीं रहता, बल्कि कई सहायक व्यवसायों को जोड़कर अपनी आय को स्थिर एवं सुरक्षित बनाता है। डेयरी से प्राप्त दूध एवं दुग्ध उत्पाद किसानों की नियमित आय का स्रोत बनते हैं, वहीं पशुओं से प्राप्त गोबर और मूत्र का उपयोग जैविक खाद एवं प्राकृतिक कीटनाशक बनाने में किया जाता है। इससे खेती की लागत कम होती है और संसाधनों का पुनः उपयोग संभव हो पाता है। इसी प्रकार मत्स्य पालन से भी अतिरिक्त आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। तालाबों का उपयोग जल संरक्षण के साथ–साथ मछली उत्पादन के लिए किया जाता है, जिससे किसानों को वर्षभर अतिरिक्त आय मिलती रहती है। फसल उत्पादन, डेयरी और मत्स्य पालन के समन्वय से कृषि अधिक स्थिर और जोखिम रहित बनती है। यदि किसी एक क्षेत्र में नुकसान हो जाए, तो अन्य गतिविधियाँ आर्थिक संतुलन बनाए रखने में सहायता करती हैं। यह प्रणाली किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के साथ–साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ करती है।

इस सफल जैविक कृषि मॉडल का सबसे सकारात्मक प्रभाव यह है कि क्षेत्र के अन्य किसान भी जैविक खेती अपनाने के लिए प्रेरित हो रहे हैं। जब किसान अपने आसपास किसी सफल उदाहरण को देखते हैं, तो उनमें नई तकनीकों और पद्धतियों को अपनाने का उत्साह बढ़ता है। इस मॉडल ने यह सिद्ध कर दिया है कि जैविक खेती केवल पर्यावरण संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आर्थिक रूप से भी अत्यंत लाभकारी हो सकती है। आसपास के किसान अब रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों को समझने लगे हैं और वे भी प्राकृतिक एवं टिकाऊ कृषि पद्धतियों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। कई किसान प्रशिक्षण लेकर वर्मी कम्पोस्ट निर्माण, जैविक खाद तैयार करने तथा प्राकृतिक कीटनाशकों के उपयोग की दिशा में कार्य कर रहे हैं। इससे पूरे क्षेत्र में कृषि के प्रति एक नई सोच विकसित हो रही है। किसान अब यह महसूस कर रहे हैं कि जैविक खेती अपनाकर वे अपनी भूमि की उर्वरता बनाए रख सकते हैं, उत्पादन लागत कम कर सकते हैं और बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पाद तैयार कर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार यह मॉडल केवल एक किसान की सफलता की कहानी नहीं है, बल्कि यह पूरे क्षेत्र में टिकाऊ कृषि विकास और ग्रामीण समृद्धि का प्रेरणादायक उदाहरण बन चुका है।

सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव

जैविक खेती के प्रति किसानों में बढ़ती जागरूकता आज भारतीय कृषि व्यवस्था में एक सकारात्मक परिवर्तन का संकेत है। पहले जहां अधिकांश किसान रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर अत्यधिक निर्भर थे, वहीं अब धीरे–धीरे वे यह समझने लगे हैं कि अत्यधिक रासायनिक उपयोग से भूमि की उर्वरता कम होती है, पर्यावरण प्रदूषित होता है तथा मानव स्वास्थ्य पर भी गंभीर दुष्प्रभाव पड़ते हैं। इसी कारण किसानों के बीच जैविक खेती को अपनाने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। विभिन्न सरकारी योजनाओं, कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों तथा सामाजिक संगठनों द्वारा समय–समय पर प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ और जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं, जिनके माध्यम से किसानों को जैविक खाद, वर्मी

कम्पोस्ट, गोबर खाद, हरी खाद, जैव उर्वरक तथा प्राकृतिक कीटनाशकों के उपयोग के बारे में जानकारी दी जा रही है। किसान अब यह अनुभव करने लगे हैं कि जैविक खेती केवल पर्यावरण संरक्षण का माध्यम ही नहीं, बल्कि दीर्घकालीन आर्थिक लाभ का भी महत्वपूर्ण साधन है। जैविक उत्पादों की बाजार में अधिक मांग होने के कारण किसानों को अपनी उपज का बेहतर मूल्य प्राप्त हो रहा है, जिससे उनकी आय में भी वृद्धि हो रही है। इसके अतिरिक्त जैविक खेती भूमि की उर्वरता को बनाए रखने, जल संरक्षण करने तथा जैव विविधता को सुरक्षित रखने में भी अत्यंत सहायक सिद्ध हो रही है। इस प्रकार किसानों में जैविक खेती के प्रति बढ़ती जागरूकता कृषि क्षेत्र में एक स्वस्थ, टिकाऊ और पर्यावरण–अनुकूल भविष्य की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

जैविक खेती के विस्तार के साथ–साथ स्थानीय स्तर पर रोजगार के अनेक नए अवसर भी उत्पन्न हुए हैं। जैविक कृषि प्रणाली में श्रम की आवश्यकता अपेक्षाकृत अधिक होती है, क्योंकि इसमें प्राकृतिक तरीकों से खेती की जाती है तथा विभिन्न जैविक संसाधनों का निर्माण और प्रबंधन स्थानीय स्तर पर किया जाता है। वर्मी कम्पोस्ट इकाइयों की स्थापना, गोबर खाद निर्माण, जैव उर्वरकों की तैयारी, प्राकृतिक कीटनाशकों का उत्पादन, जैविक उत्पादों की पैकेजिंग एवं विपणन जैसे कार्यों ने ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए द्वार खोले हैं। विशेष रूप से ग्रामीण युवाओं और महिलाओं के लिए यह क्षेत्र आत्मनिर्भरता का एक महत्वपूर्ण साधन बनकर उभरा है। कई स्वयं सहायता समूह, किसान उत्पादक संगठन तथा ग्रामीण उद्यमी जैविक उत्पादों के उत्पादन और विपणन से जुड़कर आर्थिक रूप से सशक्त हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त जैविक मंडियों, किसान बाजारों तथा ऑनलाइन विपणन के बढ़ते चलन ने स्थानीय उत्पादों को व्यापक बाजार उपलब्ध कराया है, जिससे छोटे और सीमांत किसानों को भी लाभ प्राप्त हो रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में जैविक खेती आधारित लघु उद्योगों की स्थापना से पलायन की समस्या में भी कमी आई है, क्योंकि लोगों को अपने ही क्षेत्र में रोजगार के अवसर मिलने लगे हैं। इस प्रकार जैविक खेती केवल कृषि सुधार का माध्यम नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण विकास, रोजगार सृजन और सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण का भी महत्वपूर्ण आधार बनती जा रही है।

उपभोक्ताओं को शुद्ध एवं सुरक्षित खाद्य उत्पाद उपलब्ध कराने में भी जैविक खेती की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में लोग स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं और वे ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन करना चाहते हैं जिनमें रासायनिक अवशेष, जहरीले कीटनाशक या हानिकारक तत्व न हों। पारंपरिक रासायनिक खेती में अत्यधिक मात्रा में कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरकों का उपयोग किया जाता है, जिसके अवशेष फल, सब्जियों और अनाज में बने रहते हैं तथा मानव शरीर में प्रवेश कर अनेक गंभीर बीमारियों का कारण बन सकते हैं। इसके विपरीत जैविक खेती में प्राकृतिक खादों और जैविक विधियों का उपयोग किया जाता है, जिससे उत्पाद अधिक पौष्टिक, स्वादिष्ट और सुरक्षित बनते हैं। जैविक खाद्य पदार्थों में विटामिन, खनिज एवं पोषक तत्वों की मात्रा अधिक पाई जाती है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होते हैं। बच्चों, वृद्धों और रोगियों के लिए जैविक खाद्य पदार्थ विशेष रूप से उपयोगी माने जाते हैं, क्योंकि इनमें रासायनिक प्रदूषण की संभावना बहुत कम होती है। आज शहरी क्षेत्रों में जैविक उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है और लोग स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए अधिक मूल्य देकर भी जैविक खाद्य पदार्थ खरीदना पसंद कर रहे हैं। इसके साथ ही जैविक खेती पर्यावरण को भी सुरक्षित रखती है, जिससे जल, मिट्टी और वायु प्रदूषण में कमी आती है तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वस्थ प्राकृतिक संसाधन सुरक्षित रहते हैं। इस प्रकार जैविक खेती उपभोक्ताओं को सुरक्षित, पौष्टिक और गुणवत्तापूर्ण खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराने के साथ–साथ स्वस्थ समाज और स्वच्छ पर्यावरण के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

निष्कर्ष

देवेन्द्र सिंह सिसोदिया द्वारा अपनाई गई समेकित जैविक कृषि प्रणाली आधुनिक कृषि क्षेत्र में एक अत्यंत प्रेरणादायक एवं अनुकरणीय मॉडल के रूप में उभरकर सामने आई है। वर्तमान समय में जब कृषि क्षेत्र अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है, जैसेकृभूमि की उर्वरता में कमी, जल संकट, रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों पर बढ़ती निर्भरता, उत्पादन लागत में वृद्धि तथा किसानों की घटती आयकृऐसी परिस्थिति में देवेन्द्र सिंह सिसोदिया द्वारा अपनाई गई यह समेकित जैविक कृषि प्रणाली यह सिद्ध करती है कि यदि वैज्ञानिक तकनीकों, पारंपरिक ज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित एवं विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए, तो खेती को न केवल अधिक लाभकारी बनाया जा सकता है बल्कि उसे दीर्घकाल तक टिकाऊ और पर्यावरण–अनुकूल भी बनाया जा सकता है। उनकी कृषि पद्धति केवल फसल उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह खेती, पशुपालन, जैविक खाद निर्माण, जल संरक्षण, वृक्षारोपण तथा प्राकृतिक संसाधनों के समन्वित प्रबंधन का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

देवेन्द्र सिंह सिसोदिया ने यह समझा कि केवल रासायनिक खेती पर आधारित कृषि प्रणाली लंबे समय तक किसानों को स्थायी लाभ नहीं दे सकती। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की गुणवत्ता लगातार घटती जाती है, जिससे उत्पादन क्षमता प्रभावित होती है। इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए उन्होंने जैविक खेती को अपनाया और स्थानीय संसाधनों के उपयोग पर विशेष बल दिया। उन्होंने खेतों में गोबर खाद, वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद, जीवामृत, घनजीवामृत तथा अन्य जैविक उर्वरकों का उपयोग प्रारंभ किया। इससे मिट्टी की संरचना में सुधार हुआ, भूमि की जलधारण क्षमता बढ़ी तथा खेतों में सूक्ष्मजीवों की सक्रियता में वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप फसलें अधिक स्वस्थ और गुणवत्तापूर्ण होने लगीं। उनकी खेती में रासायनिक अवशेषों का उपयोग न्यूनतम होने के कारण उत्पादों की गुणवत्ता बेहतर हुई और बाजार में उन्हें अधिक मूल्य प्राप्त होने लगा।

समेकित जैविक कृषि प्रणाली की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें कृषि को एक समग्र इकाई के रूप में देखा जाता है। देवेन्द्र सिंह सिसोदिया ने केवल फसल उत्पादन पर निर्भर रहने के बजाय पशुपालन, डेयरी, बकरी पालन, मुर्गी पालन तथा मत्स्य पालन जैसी गतिविधियों को भी खेती के साथ जोड़ा। इससे आय के विभिन्न स्रोत विकसित हुए और कृषि अधिक स्थिर एवं सुरक्षित बनी। पशुओं से प्राप्त गोबर और मूत्र का उपयोग जैविक खाद एवं प्राकृतिक कीटनाशकों के निर्माण में किया गया, जबकि खेतों से प्राप्त अवशेष पशुओं के चारे के रूप में प्रयुक्त होने लगे। इस प्रकार कृषि और पशुपालन के बीच एक परस्पर सहयोगी चक्र विकसित हुआ, जिससे लागत में कमी आई और

संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग संभव हो सका। यह प्रणाली "कचरे से संसाधन" की अवधारणा को भी साकार करती है, क्योंकि इसमें खेत या पशुपालन से निकलने वाले अवशेषों का पुनः उपयोग किया जाता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि देवेन्द्र सिंह सिसोदिया द्वारा अपनाई गई समेकित जैविक कृषि प्रणाली केवल एक खेती पद्धति नहीं, बल्कि टिकाऊ विकास, पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण आत्मनिर्भरता और किसानों की आर्थिक समृद्धि का एक व्यापक मॉडल है। यह प्रणाली यह स्पष्ट संदेश देती है कि यदि किसान वैज्ञानिक ज्ञान, आधुनिक तकनीकों और प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग करें, तो कृषि को अधिक लाभकारी, सुरक्षित और भविष्य उन्मुख बनाया जा सकता है। उनका यह मॉडल क्षेत्र के किसानों के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण है और आने वाले समय में भारतीय कृषि को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।